SHODH SAGAR®
Innovative Research Thoughts
ISSN: 2454-308X | Vol. 10 | Issue 3 | Jul - Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

भारत में धार्मिक सांप्रदायिक हिंसा का विश्लेषणात्मक पद्धति अध्ययन

Kirti Karothiya
Guide - Dr. Rekha Rani sharma
Co Guide - Pro. Sanjay Kulshrestha
kirtikarothiyacj1994@gmail.com

Doi: https://doi.org/10.36676/irt.v10.i3.1416
Accepted: 10/06/24 Published: 05/07/2024
* Corresponding author

सार

इन संघर्षों को बढ़ावा देने वाले सामाजिक-राजनीतिक और ऐतिहासिक तत्वों पर जोर देते हुए, यह पुस्तक भारत में धार्मिक सांप्रदायिक हिंसा का विश्लेषणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह गुजरात में 2002 में हुए दंगों जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं की जांच करती है और इस बात पर गौर करती है कि राजनीतिक व्यवस्था, सरकार और चरमपंथी संगठन किस तरह तनाव को बढ़ा सकते हैं। अध्ययन में सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक विश्लेषणों का उपयोग करके सांप्रदायिक हिंसा के तंत्र और अंतर्निहित कारणों की जांच करने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। भारत में संघर्ष समाधान और सांप्रदायिक सद्भाव के संभावित रास्तों के बारे में ज्ञान को आगे बढ़ाने के लक्ष्य के साथ, यह लोकप्रिय आख्यानों पर सवाल उठाता है और इस तरह के विवादों के पीछे के कारणों पर एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।

कीवर्ड-: हिंसा, सांप्रदायिक, धार्मिक, भारत।

1. परिचय

भारत, सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र, अपनी विविधता में एकजुट है, जहाँ सभी धर्मों, संस्कृतियों, बोलियों और अन्य पृष्ठभूमियों के लोग शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में हैं। मानवता पर एक विपत्ति, हिंसा ने हमारे अधिकांश समुदायों पर कई तरह के प्रभाव डाले हैं। जब किसी भी तरह की हिंसा - चाहे वह मौखिक, शारीरिक, यौन या मनोवैज्ञानिक हो - किसी समूह, व्यक्ति, संगठन, देश या किसी और द्वारा की जाती है, तो यह मानवता को गहराई से डराती है। भारत में समुदाय धर्म और जनसांख्यिकी में अंतर के परिणामस्वरूप सांप्रदायिक हिंसा में वृद्धि देखी गई है। राजनीतिक दलों ने भी कभी-कभी इसे भड़काया है, जिसके परिणामस्वरूप आम जनता और राष्ट्रीय संप्रभुता को गंभीर नुकसान हुआ है। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर हमलों के बाद, धर्म और हिंसा के बीच संबंध ने महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया। धर्म हाल ही में हिंसक और अहिंसक दोनों तरह की कार्रवाइयों के लिए प्रेरणा का एक वैश्विक स्रोत बन गया है। भारत में, अंतर-सामुदायिक हिंसा एक महत्वपूर्ण समस्या है जो सामाजिक व्यवस्था को बाधित करती है और शांति का उल्लंघन करती है। भारत जैसे देश में लोगों के बीच एकता और भाईचारे की कमी है, जहाँ धर्म, रीति-रिवाज, भाषा और संस्कृति जगह-जगह अलग-अलग हैं। जब अलग-अलग धार्मिक समूहों के सदस्यों की एक-दूसरे से अलग मान्यताएँ होती हैं, तो दंगे हो सकते हैं। समुदाय के कानून सांप्रदायिक हिंसा के इन कृत्यों में भूमिका निभा सकते हैं। सामुदायिक हिंसा के कुछ सबसे प्रसिद्ध उदाहरण दंगे हैं। कई दंगे हुए हैं, लेकिन सबसे प्रसिद्ध गुजरात दंगे (2002) और बॉम्बे दंगे (1992) हैं, जो बाबरी मस्जिद के विध्वंस और गोधरा में एक ट्रेन में आगजनी के बाद हुए थे।

भारत में हर किसी को देश के संविधान के अनुसार अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता है। इस सत्य को नकारना, विवाद करना या कम करना असंभव है। "शांति से जियो और दूसरों को भी शांति से जीने दो" एक ऐसा सिद्धांत है जिसे हमें अपनाना चाहिए। जब तक हम एक साथ खड़े रहेंगे, विभिन्न धर्मों और जातियों के व्यक्तियों का सम्मान करेंगे और उनकी मान्यताओं और आदर्शों की सराहना करेंगे, तब तक अंतर-समूह हिंसा के लिए कभी जगह नहीं

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

हो सकती। ताकत एकता से आती है। हालाँकि, हमारे देश की त्रासदी यह है कि, आज़ादी के 70 साल बाद भी, सांप्रदायिकता का अभिशाप अभी भी भारत को परेशान कर रहा है। विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संघर्ष सांप्रदायिक हिंसा का परिणाम है। इन दिनों, अंतर-धार्मिक संघर्ष सामुदायिक हिंसा में एक प्रमुख योगदान कारक है, जो न केवल कुछ लोगों को बल्कि आम जनता और परस्पर विरोधी धर्मों को भी प्रभावित करता है।

समाज और राज्य की स्थिरता और खुशहाली के लिए सबसे बड़ा खतरा सांप्रदायिकता है, खास तौर पर हिंदू-मुस्लिम दंगों के रूप में इसका भयानक रूप। पिछले कुछ दशकों में, अन्य भाषाई और धार्मिक अल्पसंख्यकों को भी बहुत नुकसान उठाना पड़ा है। स्टीन और उनके दो छोटे बेटों को कार में जिंदा जलाए जाने की घटना ने ईसाइयों के खिलाफ अत्याचारों को उजागर कर दिया। इस घटना के देश और दुनिया को हिला देने के बाद भी, गुजरात और देश के अन्य हिस्सों में ईसाइयों के चर्च और घरों में आग लगाई जा रही थी। दिल्ली और उत्तर प्रदेश में सिख विरोधी दंगों से देश की एकता बुरी तरह से हिल गई थी और पंजाब और अन्य क्षेत्रों में सिखों को भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था। कश्मीरी पंडितों को व्यवस्थित बहिष्कार का सामना करना पड़ा और उन्हें अपने ही देश में भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। मुंबई और उत्तर पूर्व में उत्तर भारतीयों को सभी रंगों के आतंकवादियों द्वारा किए गए इसी तरह के अपराधों के कारण भयानक जीवन जीना पड़ा।

2. साहित्य की समीक्षा

सरमा, सी.के. (2020)। अध्ययन में भारतीय सांप्रदायिक दंगों पर शोध में वर्तमान विकास को शामिल किया गया है। हालाँकि भारत में सांप्रदायिक दंगे हमेशा से एक समस्या रहे हैं, लेकिन औपनिवेशिक काल के दौरान, यह मुद्दा और भी बदतर हो गया। विभाजन के आसपास स्वतंत्रता-संबंधी दंगों के बाद, सामुदायिक अशांति कम हो गई, लेकिन पूरी तरह से गायब नहीं हुई। स्वतंत्रता के बाद, 1970 के दशक की शुरुआत में, देश के कई क्षेत्रों में अक्सर सांप्रदायिक दंगे होने लगे। भारत में सांप्रदायिक हिंसा के कारणों की जाँच करने के लिए इतिहासकारों और सामाजिक वैज्ञानिकों ने अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाए हैं। सामाजिक वैज्ञानिकों ने पिछले 20 वर्षों के दौरान ऐतिहासिक डेटा का अध्ययन करके और गहन नृवंशविज्ञान अनुसंधान करके कई नई व्याख्याएँ और पद्धतियाँ बनाई हैं। यहाँ, भारतीय सांप्रदायिक संघर्ष पर साहित्य में इन नए दृष्टिकोणों के योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। इन पद्धतियों ने नागरिक समाज में नागरिक भागीदारी, चुनावी संबंध, जातिगत प्रतिद्वंद्विता और मुसलमानों और हिंदुओं के बीच समस्याग्रस्त संबंधों की औपनिवेशिक उत्पत्ति की कई कोणों से जाँच की है ।

चीसमैन, एन. (2017)। म्यांमार 2012 से 2014 तक सामूहिक हिंसा से ग्रस्त रहा। बड़ी संख्या में बौद्धों ने मुसलमानों पर हमला किया। इस लेख में हिंसा को "सांप्रदायिक" के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि इसमें बार-बार सार्वजनिक घोषणाएँ शामिल थीं कि मुसलमान बौद्धों के लिए अस्तित्व का खतरा पैदा करते हैं, साथ ही समय-समय पर प्रत्यक्ष शारीरिक आक्रमण भी किया जाता है। यह हिंसा और व्याख्या प्रथाओं के योगदान के तरीकों दोनों पर शोध करने के लिए व्याख्यात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। घटनाओं का एक स्पष्ट रूप से सुसंगत चित्रण बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकों की उपेक्षा करते हुए, व्याख्यात्मक शोध हिंसा की स्वीकृत व्याख्याओं और उन श्रेणियों को चुनौती देता है जो इसके अध्ययन के लिए स्पष्ट लगती हैं। हालाँकि, जैसा कि इस विशेष अंक के शोधपत्र प्रदर्शित करते हैं, व्याख्यावादी वस्तुनिष्ठ सत्य की खोज के विरोधी नहीं हैं। सभी लेखक सत्य के लिए सम्मोहक तर्क प्रस्तुत करते हैं, लेकिन वे तथ्यात्मक सत्य की सीमाओं को भी स्वीकार करते हैं। म्यांमार में सांप्रदायिक हिंसा के उद्भव के लिए प्रेरित करने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं, आख्यानों, इतिहासों और टाइपोलॉजी पर ध्यान केंद्रित करके, वे इन तर्कों को पुष्ट करते हैं।

देवदास, डीआई (2018)। धर्मनिरपेक्ष भारतीय गणराज्य ने भारतीय ईसाई पहचान के साथ समस्याओं का सामना करना शुरू कर दिया। भारत ने सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में पहली बार पश्चिमी ईसाई धर्म का अनुभव किया। 20वीं सदी की शुरुआत से, हिंदू चरमपंथियों ने हिंदुत्व दर्शन पर आधारित कई हिंदू संगठनों की स्थापना करके ईसाई धर्म का जमकर विरोध किया है। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद धार्मिक सांप्रदायिक हिंसा में वृद्धि हुई, जिसने धर्म के नाम पर लोगों को विभाजित किया और भारतीय राजनीति पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। कंधमाल के सांप्रदायिक

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

दंगों का एक लंबा इतिहास है। 2007 और 2008 में हुए दंगों के परिणामस्वरूप 100 से अधिक लोगों की जान चली गई और 56,000 ईसाई विस्थापित हो गए। यह धर्म के आधार पर देश के सांप्रदायिक विभाजन के परिणामों में से एक था। अध्ययन हिंसा के कारणों और समस्या के दायरे को निर्धारित करने के लिए चार सिद्धांतों का उपयोग करता है। कंधमाल में, दो मुख्य जातीय समूह हैं। मूलनिवासी लोगों को आदिवासी कोंड के नाम से जाना जाता है, जबकि दलित पना वे लोग हैं जो सदियों पहले पहाड़ी इलाकों में चले गए और कोंडों के बीच रहने लगे। पना ने कोंडों की भाषा, संस्कृति और परंपराओं को आत्मसात कर लिया। कंधमाल के पहाड़ी इलाकों में यूरोपीय लोगों के आने के कुछ समय बाद ही यह मुद्दा उठा। यूरोपीय लोगों ने सभ्यता के नाम पर मूल निवासियों को अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं को छोड़ने के लिए मजबूर किया। जबकि पना ने यूरोपीय लोगों का स्वागत किया और ईसाई धर्म अपना लिया, कोंडों ने उनका विरोध किया।

3. सांप्रदायिक हिंसा के कारण

समुदायों में दंगे कई तरह के कारणों और घटनाओं के कारण होते हैं, जो उनके बढ़ने में योगदान दे सकते हैं। अलग-अलग और साथ में, ये तत्व सामाजिक उत्साह को बढ़ावा देने में भूमिका निभाते हैं, जो सबसे मामूली उकसावे को भी बेवजह खून-खराबे में बदल सकता है। सामाजिक संदर्भ के अलावा, ऐसे अतिरिक्त कारण भी हैं जो हर स्थान पर सांप्रदायिक हिंसा को भड़का सकते हैं।

सांप्रदायिक हिंसा के तीन मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:-

1. सामान्य कारण,
2. धार्मिक कारण, और
3. तुच्छ कारण.

3.1. सामान्य कारण

सांप्रदायिक हिंसा के पीछे कई जटिल कारक भी शामिल हैं। कई परस्पर जुड़े हुए कारण हैं कि सामुदायिक हिंसा क्यों शुरू हुई, क्यों यह जारी रही, क्यों पुलिसिंग प्रभावी नहीं रही और क्यों सामान्य स्थिति में लौटने में इतना समय लगा। सांप्रदायिक हिंसा के मुद्दे के कारण को समझना ज़रूरी है।

सामान्य कारणों को आगे उप श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:-

(ए)फूट डालो और राज करो की नीति

स्वतंत्रता से पहले लागू की गई ब्रिटिश शासक की फूट डालो और राज करो की रणनीति ने मुसलमानों और हिंदुओं के बीच संबंधों पर गहरा प्रभाव डाला। इस नीति के कारण, समुदायों के बीच गंभीर संघर्ष हुए, जिससे देश की सुरक्षा और जीवन खतरे में पड़ गया। 1857 के विद्रोह के बाद, जिसने ब्रिटिश शासकों को रक्षात्मक बना दिया, उन्होंने "फूट डालो और राज करो" की नीति को लागू किया, जिससे समुदायों को उनके संबंधित सांप्रदायिक जीवन, विशेष रूप से मुसलमानों और हिंदुओं के आधार पर विभाजित किया गया। 1872 में, ब्रिटिश शासकों ने अन्य कारणों के अलावा, इस कारण से औपनिवेशिक भारत में पहली जनगणना की। 20वीं सदी की शुरुआत में, 1872 की जनगणना ने बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के बीच की सीमाओं को परिभाषित किया और सामूहिक पहचान की भावना को बढ़ावा दिया। फूट डालो और राज करो की नीति के परिणामस्वरूप 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ, जो सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने का एक अनूठा उदाहरण था। एक बार फिर, अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों के राजनीतिक उपकरण का उपयोग करके सांप्रदायिक धारणा को बनाए रखा गया, जिसके तहत धार्मिक अल्पसंख्यकों को प्रत्येक प्रांत में रहने वाली उनकी आबादी के प्रतिशत के आधार पर विधायिका में सीटें आवंटित की गईं। इससे राष्ट्र में समुदायों के बीच पहले से मौजूद विभाजन और गहरा गया। महात्मा गांधी ने भाईचारे की भावना को पुनर्जीवित करने के लिए कड़ी मेहनत की। तब से, हिंदू-मुस्लिम संबंधों में बहुत अधिक कलह और दुश्मनी देखी गई है जो पहले से कहीं

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

अधिक गहरी हो गई है। विभाजन के बाद के दौर में ब्रिटिश शासकों की "फूट डालो और राज करो" की रणनीति को भारतीय शासक वर्ग ने दोनों समुदायों के लोगों के खिलाफ़ बनाए रखा ताकि उन्हें विभाजित रखा जा सके और लगातार संघर्ष में उलझाया जा सके।

(बी) राजनीतिक कारक

हम सांप्रदायिक राजनीति के विफल होने की उम्मीद नहीं कर सकते जब तक कि समाज को आधार देने वाली सामाजिक-आर्थिक संरचना और सांप्रदायिक विचारधारा को चुनौती नहीं दी जाती। राजनीतिक प्रेरणाएँ लगभग हमेशा सामुदायिक हिंसा को बढ़ावा देती हैं। पैसे और शक्ति, पुरानी पहचान, सांप्रदायिक नारे, सिद्धांतवादी मुद्दों आदि के इस्तेमाल से राजनीतिक लाभ को अधिकतम करने की प्रवृत्ति अधिक प्रचलित हो रही है। कुलीन हिंदू और मुस्लिम समूहों के बीच सांप्रदायिक संघर्ष का प्राथमिक चालक राजनीतिक और आर्थिक शक्ति दोनों पर एकाधिकार की इच्छा थी। ज़ेनाब बानो के अनुसार, "सत्ता के संसाधनों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष ही सांप्रदायिकता के परिणामों की ओर ले जाता है, जिसमें समूह पूर्वाग्रह, समुदाय के भीतर विरोधाभास, समुदाय के भीतर तनाव और समुदाय के भीतर हिंसा शामिल हैं।" आर्थिक प्रभुत्व और शक्ति सांप्रदायिकता के मूल में हैं। इसके अतिरिक्त, प्रभा दीक्षित द्वारा सांप्रदायिकता को "एक राजनीतिक सिद्धांत के रूप में देखा जाता है जो राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक मतभेदों का शोषण करता है।"

(सी)सामाजिक-राजनीतिक मुद्दे

यह एक तथ्य है कि भारतीय समाज में विभिन्न इस्लामी या हिंदू समूहों के बीच मतभेद होते रहते हैं। सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं ने अक्सर सांप्रदायिक संघर्ष को उकसाया। दो मुख्य मुद्दे जो सामने आए वे थे "उर्दू-देवनागरी" विवाद और "गौ रक्षा।" उत्तर प्रदेश के प्राचीन और नए अभिजात वर्ग के बीच तनाव देवनागरी लिपि के उपयोग की मांग से जुड़ा था, जिसे मूल रूप से बनारस (अब वाराणसी के रूप में जाना जाता है) में कुछ हिंदुओं द्वारा 1868 में बनाया गया था और 1900 में लेफ्टिनेंट गवर्नर मैकडॉनेल द्वारा अनुमोदित किया गया था। 1880 के दशक के उत्तरार्ध में, स्थानीय गोरक्षिणी सभाएँ पूरे उत्तरी भारत में फैल गईं, और अधिक उग्र हो गईं और गंभीर सामाजिक अशांति पैदा कर रही थीं। हालाँकि, उसी समय, मुस्लिम पुनरुत्थानवादी आंदोलनों ने इस बात पर जोर दिया कि "बक़रीद" या बलिदान के त्योहार के लिए बलिदान करना कितना महत्वपूर्ण था। परिणामस्वरूप, 1893 में, सामुदायिक रक्तपात के लिए मंच तैयार हो गया। बनाने की कोशिश करने के बाद, देश ने 1967 में रांची में सांप्रदायिक हिंसा भी देखी। बिहार की दूसरी आधिकारिक भाषा उर्दू है। बैंगलोर में सामुदायिक हिंसा 1994 में तब शुरू हुई जब बैंगलोर दूरदर्शन (डीडी) ने एक संक्षिप्त "उर्दू समाचार बुलेटिन" शुरू किया। लेकिन यह स्पष्ट था कि इस पूरी घटना का "भाषाई भावनाओं" के अलावा एक राजनीतिक उद्देश्य भी था।

4. गुजरात नरसंहार: मिथक और दोष

गुजरात के अंदरूनी इलाकों में, अंतिम चिंगारी बुझने से पहले ही, कहानियाँ फैलने लगीं, आरोप लगाए गए, तथा स्पष्टीकरण और प्रति-स्पष्टीकरण दिए गए कि कैसे अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्यों ने ट्रेन में आग लगाकर दंगा शुरू किया था।1. गुजरात सरकार (साथ ही राष्ट्रीय सरकार, जिसने इस नरसंहार पर अपनी चुप्पी बनाए रखी) ने इसके बाद हुई हत्या और उत्पात को गोधरा ट्रेन-अग्नि घटना के "बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया" के रूप में वर्णित किया। भाजपा प्रशासन और उसके संघ2 सहयोगियों ने मुसलमानों को "सबक" सीखने की ज़रूरत के बारे में कई तरह की चिंताएँ व्यक्त कीं, जिसके न होने पर वे जनसंख्या और अधिकार दोनों के मामले में राज्य पर नियंत्रण कर लेंगे। इसके अलावा, अहमदाबाद और वडोदरा की सड़कों पर भीड़ लगाने वाले 'पाकिस्तानी एजेंटों' को यह दिखाने की ज़रूरत थी कि वे कहाँ हैं। राज्य के आधिकारिक तंत्र और संघ परिवार के राष्ट्रव्यापी नेटवर्क के सदस्यों द्वारा दिए गए राजनीतिक-धार्मिक औचित्य से कोई भी सहमत नहीं हुआ। आखिरकार, ये सब जटिल हठधर्मिता और तर्क की कमी की बू आ रही थी।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

लेकिन इस रक्तपात ने कई युवा और बुजुर्ग शिक्षाविदों को धार्मिक संघर्षों के कई कारणों के बारे में स्वीकृत सिद्धांतों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया। पॉल ब्रास ने आधुनिक भारत में हिंदू-मुस्लिम हिंसा पर अपने शोध में इन व्याख्याओं को "रहस्यमयी" और "असंतोषजनक" बताया है।3. दंगों के बारे में स्वाभाविक आख्यानों ने हमेशा उन्हें गहरे, समझ से परे और अक्सर ऐतिहासिक मतभेदों से अलग हुए लोगों के समूहों के बीच क्रोध और हिंसा के अपरिहार्य विस्फोट के रूप में प्रस्तुत किया है।

5. निष्कर्ष

समकालीन सामाजिक ढांचे में सांप्रदायिकता को मजबूत करने में योगदान देने वाला एक प्रमुख कारक राजनीतिक सत्ता हासिल करने के प्रयास में अपने धार्मिक विश्वासों के आधार पर समाज के वर्गों का लामबंदी है। पिछले दस वर्षों में इस धारणा की अभिव्यक्ति देखी गई है। धार्मिक असमानताओं के अलावा, सांप्रदायिकता को कई अन्य सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक कारकों द्वारा भी आकार दिया गया, जिससे समुदायों के भीतर तीव्र विभाजन और विवाद पैदा हुए। अन्य तत्व, जो व्यवहार में शांतिपूर्ण धर्म से उग्र सांप्रदायिकता में संक्रमण को गति देते हैं, अव्यक्त हैं, जबकि धार्मिक मतभेद प्रकट हैं। चूंकि भारत में धर्म व्यावहारिक रूप से हर किसी के जीवन में समाया हुआ है और जन्म से मृत्यु तक उनका अनुसरण करता है, इसलिए धर्म के नाम पर पूरे समाज को एकजुट करना मुश्किल नहीं है। राजनेता कई धार्मिक समुदायों के संप्रदायों के लिए एक सामान्य धार्मिक कारण बनाते हैं ताकि उन्हें एक मंच पर एकजुट किया जा सके और इसे राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सके। इस प्रकार की कार्रवाई का एक स्पष्ट उदाहरण हिंदुओं के लिए एक एकीकृत कारण के रूप में राम मंदिर का निर्माण है, चाहे वह सांप्रदायिक विभाजन हो या न हो। भले ही राम देश के कई क्षेत्रों, खासकर पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में लोकप्रिय देवता नहीं हैं, लेकिन मंदिर अभियान इस मामले में हिंदू आबादी को एकजुट करने में सफल रहा है। इससे यह भी पता चलता है कि सांप्रदायिकता का भारत की पूरी राजनीतिक व्यवस्था पर असर पड़ा है। धर्मनिरपेक्ष राजनीति के सांप्रदायिकरण ने मतदान प्रक्रिया को बुरी तरह से भ्रष्ट कर दिया है ।

संदर्भ

1. सरमा, सी.के. (2020). भारत में सांप्रदायिक हिंसा को समझना: नए दृष्टिकोणों की समीक्षा। सामाजिक परिवर्तन और विकास, XVII, 2, 75-97.
2. ब्रास, पी.आर. (2011). समकालीन भारत में हिंदू-मुस्लिम हिंसा का उत्पादन. यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस.
3. चीज़मैन, एन. (2017). परिचय: म्यांमार में सांप्रदायिक हिंसा की व्याख्या। जर्नल ऑफ़ कंटेम्परारी एशिया, 47(3), 335-352.
4. देवदास, डीआई (2018)। भारत में ईसाई पहचान, हिंदू राष्ट्रवाद और धार्मिक सांप्रदायिक हिंसा, कंधमाल, ओडिशा के विशेष संदर्भ में (1985-2010) (डॉक्टरेट शोध प्रबंध)।
5. गुप्ता, एन. (2021). सांप्रदायिक हिंसा: भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच तुलनात्मक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट (आईजेएम), 12(2)।
6. मित्रा, एस. (2003). सांप्रदायिक राजनीति की यह नैतिकता: पॉल ब्रास, हिंदू-मुस्लिम संघर्ष और भारतीय राज्य. इंडिया रिव्यू, 2(4), 15-30.
7. कुरैशी, एफएस (2018)। भारत में राष्ट्रवाद और राजनीतिक हिंसा (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, मोंटेरे, सीए; नेवल पोस्टग्रेजुएट स्कूल)।
8. फ़ारूक़ी, एन., और अहमद, ए. (2021)। सांप्रदायिक हिंसा, मानसिक स्वास्थ्य और उनके सहसंबंध: भारत में उत्तर प्रदेश के दो दंगा प्रभावित जिलों में एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन। जर्नल ऑफ़ मुस्लिम माइनॉरिटी अफ़ेयर्स, 41(3), 510-521।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

9. साहा, एस. (2009). सुधीर कक्कड़ और भारत में हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगों की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक व्याख्या। ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स एंड हिस्ट्री, 55(4), 565-583.
10. अकोमा, जे.के.के. (2009). जातीय दंगों के उत्पादन के लिए धार्मिक पहचान का कार्यात्मक उपयोग: स्रोतों का विश्लेषण।
11. बकेल, सी.ए. (2011). भारत में धर्म, हिंसा और शांति: भारत में सांप्रदायिक हिंसा किस हद तक धार्मिक विश्वास से प्रेरित है और किस हद तक धर्म शांति निर्माण के प्रयासों को प्रेरित करता है? (स्नातक थीसिस)।
12. कुमार, एम., और कुमार, एम. (2009). स्वतंत्रता के बाद के गुजरात में सांप्रदायिक दंगे, यौन हिंसा और हिंदू राष्ट्रवाद (1969-2002) (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, यूके)।
13. पीर, वाई. (2007). गुजरात में सांप्रदायिक हिंसा: भारत में सांप्रदायिकता और संस्थागत अन्याय की भूमिका पर पुनर्विचार। अमेरिकी विश्वविद्यालय।
14. डेविडसन, एस.जे. (2009)। सोहार्तो के बाद इंडोनेशिया में बड़े पैमाने पर सामूहिक हिंसा के अध्ययन। क्रिटिकल एशियन स्टडीज, 41(2), 329-349।
15. वैन'ट आइंडे, एल., और डे ज़्वार्ट, एफ. (2016). समकालीन भारत में अंतर-सामुदायिक जुड़ाव और हिंदू-मुस्लिम हिंसा: 2013 मुज़फ़्फ़रनगर दंगे।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com